रमेश जोशी- 18 अगस्त 1942 को चिड़ावा में जन्मे रमेश जोशी विगत 30 वर्षो के अपने सृजनकाल में उदारीकरण के बाद की विडंबनाओं के सृजन के लिए खासे चर्चित रहे हैं। केन्द्रिय विद्यालय संगठन से जुड़े रहे जोशी की कर्जे के ठाठ, रामधुन, बेगाने मौसम, कौन सुने इकतारा और पिता शीर्षक से काव्य कृतियां प्रकाशित हैं। अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी समिति अमेरिका की प्रसिद्ध त्रैमासिकी 'विश्वा' के संपादक जोशी कई राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय साहित्यिक संस्थानों व विश्वविद्यालयों से समादृत हो चुके हैं। रास्ते में अटकी उपलब्धियां, कुड़क मुर्गियों का लोकतंत्र, निर्गुण कौन देस को बासी, देवता होने का दुःख, झुमका खोने की स्वर्ण जयंती, मूर्तियों से बंधे पशु, लोकतंत्र का ब्लू व्हेल गेम, जगदुरु जी टॉयलेट में हैं, ईश्वर के साथ सेल्फी, माई लेटर्स टू जार्ज बुश, लीला का लाइसेंस, ज्यों की त्यों धर दीनी चदरिया, इश्क का एन्साइक्लोपीडिया और एक गधे का धर्म परिवर्तन जैसी रचनाओं से चर्चा में रहे जोशी पत्र-पत्रिकाओं के लिए स्तम्भ लेखन लेखन से भी निरंतर जुड़े रहे हैं।